18-3-67 ओम शान्ति रात्रीक्लास

(आज क्लास में चुनाव प्रदर्शनी का समाचार सुना रहे थे जिसकी ओपनिंग शंकराचार्य ने की थी)

सिध ही होता है कि वो लोग यह ज्ञान ही लेंगे। उनको प्रवृती मार्ग का ज्ञान सुनना ही नही है जो कि अपनी ही बातों में अटके हुये है। वो है भक्ति मार्ग के शास्त्रों की आथारटी। तुम हो ज्ञान मार्ग की आथारटी तो यह अभी नही मानेंगे। जब बहुत-2 वृधी को पावेंगे। तब समझेंगे। परन्तु फिर भी कोशिश करनी है बाप का परिचय देना है। रचता और रचना को तुम्हारे सिवाय कोई जानते ही नही है। शंकराचार्य अन्त में भी तुम्हारी बातों को मान लेवे यह नही हो सकता है। अपना मान थोड़ेई छोड़ सकते है। फिर भी पुरूषार्थ तो करना ही चाहिये। युध तो कौरवों को करना है। कोई की तकदीर में होगा तो टच होने पर आ जावेगा। इसमें आश्चर्य नही खाना चाहिये। कहते भी है कि कोटों में कोऊं ... वो लोग तो शास्त्रों में फसें हुये है। तुमको फिर अपनी ही याद की यात्रा में रात-दिन लगे रहना चाहिये। वो लोग राजयोग को मुश्किल ही समझ सकते है। वहुत समय लगेगा। चित्र में देखेंगे कि सन्यास धर्म फलाने समय में आता है। झाड़ पर भी समझाना होता है कि तुम कब आते हो। जो समझाते है वो भी समझते होंगे कि अभी यह-2 पुआईन्टस देनी चाहिये थी। ऐसा होता ही है। बच्चे तो अच्छे ही है यहां। गर्ग समझाने में कम नही है। गर्ग भी अच्छी रीती समझाती है। इन्होंने सर्विस ठीक की है। शंकराचार्य को पकड़ कर उदघाटन करवाया है यह वहुत अच्छा किया है। इनके अपने पास बुलाना तो अच्छा ही है। आवे तो अच्छा ही है। तो मनुष्य देखेंगे कि इनके पास ऐसे-2 आते है। तो सर्विस अच्छी होगी। बच्चे जानते है कि जो सर्विस करते है वो ही ऊंच पद पाते है। सुनाया जाता है कि उमंग आवे सर्विस करने का। परन्तु धारना नां होने कारण शौक भी नही उठता है। समझा जावेगा कि ज्ञान में कच्चे है। कोई-2 समय गृहचारी भी बैठती है। बिमारी होती है तो ठण्डे हो पड़ते है। गुप्ता जी भी सर्विस का चातुक है। परन्तु सम्पूर्ण तो कोई अब तक बना ही नही है इसलिये भूले होती है। ऐसे कोई कह नही सकते है कि हमसे भूले नही होती है।

************* ** * * ****** * *

भूले तो होनी ही है जब तक कि कर्मातीत अवस्था पर पहुचां जावेगा। बाप के लिये तो कह नही सकते है। बाकी तो सब पुरूषार्थी है। सबसे ही भूले होती है नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। सब स्टुडन्टस है। ब्रह्मा भी स्टुडन्ट है। ब्रह्मा को स्टुडन्ट कहेंगे परन्तु विष्णु को नही कहेंगे। सर्विस का समाचार सुनाना अच्छा ही है। सर्विस करने का शौक जागेगा। सर्विस नां करने से पद भी भ्रष्ट होगा। राजधानी स्थापन हो रही है। आगे चल कर तो यह भी पता पड़ेगा कि मुख्य कौन राजाई में आवेंगे। यहां ही तुमको समझ मिलेगी कि राजधानी कैसे स्थापन हो रही है। नम्बरवार ही खयाल चलेगा।

19-3-67: रात्रीक्लास:- यह बागवान भी है तो रत्नागर भी है। रत्नो की भेट की जाती है नां। खुद ज्ञान सागर है तो ज्ञान रत्न ही दान करते है। बाप की श्रीमत पाकर कोई कैसा फूल बनना है कोई कैसा। बाप शिक्षा भी देते रहेंगे। समझानी भी देते रहेंगे ताड़ना भी देते रहेंगे। बाप से जो चाहो वो लो। बाप कहते है जितना खजाना लेंगे और देंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे। इसलिये ही कहा जाता है कि जीवात्मा चाहे तो अपने सुख का चाहे अपने दुःख का साधन बनावे। पढ़ाई एक ही है मनुष्य से देवता बनने की। देवताओं में भी अनेक प्रकार के पद है। इस ज्ञान से बनना है मनुष्य से देवता। यहां इस समय में है दैत्य उनमें भी ढेर वैरायटी है। भारत की ही बात है। तो जैसे कि इस आसुरी दुनियां में कोई दुःखी कोई सुखी। वहां शाहुकार भी है तो गरीब भी है इस पढ़ाई से जो मर्तबा चाहिये वो ले लो। ड्रामा को भी जान गये हो। जितना सुख लेंगे उतना-2 समझा जावेगा कि कल्प-2 ही लेंगे। हर बात में पुरूषार्थ चाहिये। बिमारी आद तो हिसाब-किताब है। आगे लिये फिर कैसे-ऐसे कर्म करें जो कि पद भी ऊंचा मिले। है सारा हर एक की पढ़ाई से अपना कल्याण करने पर सारा दारो-मदार। जितनी अपने लिये सर्विस आप ही करेंगे उतना ही ऊंचे पद पावेंगे। बच्चे सर्विस का समाचार सुनते रहते है। यह भी जानते हो कि

यह भी जानते है कि दुनियां की हालत क्या है। बिगड़ती ही रहती है। निधणके होकर आपस में लड़ मर कर खलास होंगे। तुम धणी के हो जानते हो कि हम अपना भविष्य बना रहे है। दुकानदारों को कमाई का बहुत ओना रहता है। तुम भी जानते हो कि यह ज्ञान रत्नो की जितनी कमाई करेंगे उतना धनवान सुखी बनेंगे।तमोप्रधान से सतोप्रधाप बनना ही है। बाप पढ़ाते भी है तो चक्रधारी भी बनाते है। कहते है जितना औरो का कल्याण करेंगे उतना ही सुखी और धनवान बनेंगे। दैवीगुण धारन करना अच्छा ही है। शान्त में रहना चाहिये। उल्टा सुल्टा कोई बोले तो एक कान से सुन दूसरे से निकाल तोदिल दुखेगा नही।अ

20-3-67:-मूल बात है ही बाप को याद करने की। और सृष्टीचक्र को याद करना।अपने ऊपर नजर रखनी है कि मेरे में कोई अवगुण तो नही है।बच्चों को यह चाहना है कि बाप से हम पूरा वर्सा लेवें। कोई इतनी बाते नही समझते है तो कोई हर्जा नही है।बाप से वर्सा लेना है। पहले-2 तो यह निश्चय होना चाहिये कि बाप आया हुआ है वर्सा देने लिये।बेहद का बाप तो सबका बाप है। बाप ने ही आकर पहले-2 ब्र,कु,कु को रचा है। बाप से वर्सा भी जरूर बच्चों को ही मिलना है। वर्सा भी मिलना है स्वर्ग का। अभी तुम नर्क मेंहो। बाप वर्सा देते है स्वर्ग का ।उसके लिये तो हमको पावन जरूर बनना है। बाप डायरेक्शन देते है कि मुझे याद करो तो पाप भस्म हो जावे। आशीर्वाद अक्षर भक्ति मार्ग का है। बाप कहते है मुझे बुलाते है पतित से पावन बनाने के लिये। इसके लिये राजाई देता हूं तो मुझे याद भी करो। टीचर कोई आशीर्वाद थोड़ेई करेंगे कि तुम पास हो जाओ।कृपा आशीर्वाद अक्षर तो भक्ति मार्ग के मतलतु अक्षर है कृपा होती ही नही है।हर बात में पुरूषार्थ चलता है। सन्यासियों से वर्सा नही मिलने का है। वर्सा मिलता ही है हद के बाप से और बेहद के बाप से।तुम जानते हो तुमको निश्चय है कि हम बेहद के बाप से पढ़ रहे है। आधा कल्प इसी बाप को ही याद किया जाता है। इसमे तो आशीर्वाद वा कृपाकी तो कोई बात है नही है।लौकिक बाप तो है ही पतित। यह बाप तो आते ही है पतित से पावन बनाने अब याद करना तो बच्चों का ही काम है नां।याद से ही तमो से सतो बनते है।इसमे मेहनत है मेहनत किना तो कुछ होता भी नही है। बच्चे जो आधा कल्प से देह-अभिमानी रहे है तो अब उन्हे देही-अभिमानी बनाया जाता है तो कहते है कि चलते-फिरते बाप को याद करो यही है बस मूल तो बात। बाप खुद कहते है कि मेहनत सारी इसी में है।ज्ञान भी सिर्फ कुछ काम नही आता है। योग है तो ज्ञान भी चाहिये। दोनो ही चाहिये।हेल्थ और वेल्थ दोनो ही मिलती है। है तो ज्ञान सहज ही। योग है कठिन। इसलिये पुरूषार्थ हर एक को इसका ही करना है।यह स्मृति रखनी है।बाबा समझाते है कि याद कर नही सकते है माया बुद्धी का योग उड़ा देती है। याद में ही अनेक प्रकार के तूफान आते है।याद में ही सब कच्चे है।कहते भी है कि आकर पावन बनाओ।पावन भी बने और फिर ज्ञान भी हो तो बहुत अच्छा है। एक में भी ढीले होंगे तो पद कम होगा। इसकी ही प्रैक्टिस चाहिये। रावण ने देह-अभिमानी बनाया है देही-अभिमानी बने बिना और विकर्म टूटेंगे नही। योगमें रहने बिना चाल भी कभी नही सुधरेगी। याद से ही पावन बनेंगे बुलाते भी पतित पावन को ही है सन्यासियों को थोड़ेई कहते है कि पतित से पावन बनाओं। बाबा सर्विस करने वालो की सराहना तो बहुत ही करते है नां।गुप्ता ने बहुत अच्छी सर्विस की है।

*****: * *** * **** * *****

बाबा के दिल पर चढ़े है। सर्विस से ही तो दिल पर चढ़ेंगे नां।याद की यात्रा भी जरूर चाहिये। तब ही तो सतोप्रधान बनेंगे नां। जितनी सजा जास्ती खावेंगे तो पद भी कम होता जावेगा। पाप भस्म नही होते है तो सजा बहुत खानी पड़ती है। पद भी कम हो जाता है। इसको ही घाटा कहा जाता है। यह भी तो व्यापार है नां। घाटे में नही जाना चाहिये। बाबा तो उन्नति के लिये किस्म-2 की बाते सुनाते ही रहते है। अब जो करेंगे वो ही पावेंगे। अब है रूहानी राज्य।तुमको तो परिस्तानी बनना है।गुण भी वैसे ही धारन करने है। गुड़ नाईट